प्रातःक्लास ओमशांति पिताश्री 17.10.67

ओमशांति। मीठे2 बच्चे यहां आते हैं रुहानी बाप के पास रिफ्रेश होने। फिर रिफ्रेश होकर वापस जाते हैं। तो जरूर जाकर कुछ करके दिखाना है। एक2 बच्चे को सर्विस का सबूत देना है। जैसे कोई2 बच्चे कहते हैं हमारी सेंटर खोलने की दिल है। गांवों में भी सर्विस तो करनी है ना। तो बच्चों को सदैव यह खयाल रखना चाहिए हम मंसा,वाचा,कर्मणा,तन,मन,धन से ऐसे सर्विस करें जो भविष्य 21जन्मों का एवजा बाप से मिले। यही ओना है। हम कुछ करते हैं, कोई को ज्ञान देता हूं। सारा दिन यही खयालात आनी चाहिए। भल सेंटर खोलो ;परंतु घर में स्त्री–पुरुष का अनबन न होनी चाहिए। कोई (घमासान) न रहे। सन्यासी लोग घर के घमासान से निकल जाते हैं। डोंट केअर कर चले जाते हैं। फिर गवर्मेंट उनको रोकती है क्या?वह तो सिर्फ पुरुष ही निकलते हैं। अभी तो कोई2 मातायें भी निकलती हैं। जिसका कोई धनी–धोनी नहीं होता है या वैराग्य आ जाता है। उन्हों को भी सन्यासी, पंडा लोग बैठ सिखलाते हैं। इन द्वारा अपना धंधा करवाते हैं। पैसे आदि सारे उनके पास रहते हैं। वास्तव में घर–बार छोड़ा तो पैसे रखने की दरकार नहीं रहती। तो अब बाप तुम बच्चों को समझाय रहे हैं। हर एक की बुद्धि में आना चाहिए हमको बाप का परिचय देना है। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। बेसमझ हैं। तुम बच्चों के लिए बाप का फरमान है मीठे2 बच्चों तुम अपन को आत्मा समझो। सिर्फ पंडित नहीं बनना है। बहुत पुरुषार्थ करना है। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। कहते हैं बाबा हम घड़ी2 भूल जाते हैं। संकल्प आ जाते हैं। बाबा कहते हैं वह तो आवेंगे ही। तुमको बाप की याद में रह सतोप्रधान बनना है। आत्मा जो इम्प्योर है उनको परमपिता परमात्मा को ही याद कर और प्योर बनना है। बाप ही बच्चों को डायरैक्शन देते हैं। हे फरमानबरदार बच्चे ,तुमको फरमान करता हूं मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कटेंगे। पहले2 बात ही यह सुनाओ। निराकार शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। मैं पतित–पावन हूं। मेरी याद से विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय नहीं ,न कोई बताय (सकते हैं)। ढेर के ढेर सन्यासी आदि हैं। निमंत्रण देते हैं कान्फ्रेंस में आय शामिल हो। अब योग से किसका कल्याण तो होना न है। ढेर योगाश्रम है जिनको इस योग का बिल्कुल ही पता नहीं है। बाप को ही नहीं जानते। बेहद का बाप ही आकर योग सिखलाते हैं। बाप तुम बच्चों को आप समान बनाते हैं। जैसे मैं निराकार हूं। टेम्परली इस तन में आता हूं। मेरा तो यह शरीर नहीं है। टेम्परली शरीर का आधार लेकर आय इस मुख द्वारा बच्चों को समझाता हूं। माता भी है ना। कहते हैं तो दोनों ना। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। भाग्यशाली रथ तो जरूर मनुष्य का ही होगा। बैल को तो नहीं कहेंगे। बाकी कोई घोड़े आदि की बात नहीं, न लड़ाई आदि की कोई बात है। तुम जानते हो माया से ही हमको लड़ाई करनी है। गाया भी जाता है माया ते हारे हार है.....तुम बहुत अच्छी रीति समझाय सकते हो ;परंतु अभी सीख रहे हैं। कोई सीखते2 भी गिर पड़ते हैं। एकदम पेट पर जाते हैं। कोई लून–पानी खिट2 में हो पड़ते हैं। दो बहनों का भी आपस में बनता नहीं है। लून–पानी हो पड़ते। तुम्हारे कोई भी आपस में खिट–पिट न होनी चाहिए। खिट2 होगी तो बाप कहते हैं यह क्या सर्विस करेंगे। बहुत अच्छे2 नम्बर वन,टू का भी ऐसे हाल हो जाता है। अभी माला बनाई जाये तो कहेंगे यह डिफेक्टेड माला है। इनमें (अजुन) यह अवगुण है। ड्रामाप्लेन अनुसार बाबा सर्विस भी कराते रहते हैं। डायरैक्शन देते रहते हैं। देहली में घेराव डालो। सिर्फ एक को थोड़े ही करना है। आपस में मिलकर राय करनी है। सब एक की मत होनी चाहिए। बाबा तो एक है। मददगार बिगर थोड़े ही काम करेंगे। तुम सेंटर्स खोलते हो। मदद करने वाले हैं?कहते हैं हां, बाबा। अगर मदद देने वाले न होंगे तो कुछ कर न सकेंगे। घर में भी मित्र–सम्बंधी आदि2 आते हैं। भल गाली दे। उनका तो डर रखना न है। गाली तो खानी ही है। अभी तुम जैसे बंदरों के गांव में हो। वह तुमको काटते–खाते रहेंगे। बंदर बुद्धि आपस में एक/दो को काटते रहते हैं। तो हर बात में इकट्ठी राय होनी चाहिए। सेंटर्स खोलते हैं

तो भी सब मिलकर लिखें बाबा, हम ब्राह्मणी के राय से यह काम करते हैं। सिंधी भाषा में कहते हैं बत बारह–बारह होंगे तो और ही अच्छी राय निकलेगी। कहां तो एक/दो से राय भी नहीं लेते हैं। ऐसे2 भी हैं। सिर्फ एक की राय निकलती रहती। बाकी लून–पानी। अच्छा, ऐसे कोई काम हो सकता है क्या?बाबा कहेंगे हम क्या कर सकते हैं?जब तक तुम्हारा आपस में संगठन नहीं तो तुम इतना बड़ा कार्य कैसे कर सकेंगे। छोटी दुकान, बड़ी दुकान भी होता है ना। आपस में संगठन करते हैं। ऐसे कोई नहीं कहते बाबा ,आप मदद करो। ऐसे तो सब सेंटर खोलते जायें। कहें बाबा मदद करो। पहले तो मददगार बनानी चाहिए। फिर बाबा कहते हैं हिम्मते बच्चे मददे बाप। पहले तो अपनी मददगार बनाओ। बाबा इतना करते हैं ,बाकी आप मदद दें। ऐसे नहीं पहले आप मदद करो फिर हम आपस में करेंगे। नहीं। हिम्मते मर्दा मददे खुदा.....। उनका भी अर्थ नहीं समझते। पहले तो बच्चों की हिम्मत चाहिए। कौन2 क्या मदद देते हैं। पोतामेल सारा लिखेंगे। फलाने2 यह देते हैं। बाकी आप। कायदेसिरे लिख देंगे। बाकी ऐसे थोड़े ही ,ऐसे एक2 कहेंगे हम सेंटर खोलते हैं पैसा दो। ऐसे तो बाबा नहीं खोल सकता (क्या)?ऐसे तो पैसे ही बरबाद कर दे। ऐसे नहीं हो सकता। कमिटी को आपस में मिलना होता है। तुम्हारे (में) भी नम्बरवार हैं ना। कोई तो बिल्कुल कुछ भी नहीं समझते। कोई बहुत हर्षित होते रहते हैं। बाबा समझाते हैं इस ज्ञान में बहुत खुशी रहनी चाहिए। एक ही बाप, टीचर,गुरू मिलता है तो खुशी होनी चाहिए। दुनियां में यह बातें कोई नहीं जानते। शिवबाबा ही ज्ञान का सागर पतित–पावन, सर्व की सदगति दाता है। सबका फादर भी एक ही है। यह और कोई की बुद्धि में नहीं है। अभी तुम बच्चे समझते हो वह ही नालेजफुल ,लिबरेटर ,गाइड है। तो बाप की मत पर चलना पड़े। आपस में मिल कर राय करनी है। खर्चा करना है। आधा में जाम ,आधा में रईयत। .....समझते हैं पहले जाम को पकड़ें। ज्वारा आटा बहुत है। आज मदद देने तैयार हैं ,कल बदल जावेंगे। बाप तो है सत्य। बहुत फिर कहकर बदल जाते हैं। बाप तो ऐसे नहीं.....ना। यह भी कोई में अक्ल नहीं है कि कार्य कैसे चलाना चाहिए युक्ति से। हर एक सेंटर में आपस में मिलकर राय करनी चाहिए। एक की मत पर तो नहीं चल सकती। मददगार सब चाहिए। यह भी बुद्धि चाहिए ना। तुम बच्चों को घर2 में मैसेज देना है। पूछते हैं शादी में शादी में निमंत्रण मिलता है ,जावें?बाबा कहते हैं क्यों न जाओ?जाकर अपनी सर्विस करनी है। बहुतों को (का) कल्याण करो। भाषण भी कर सकते हो। मौत सामने खड़ी है। बाप कहते हैं मामेकम याद करो। यहां सब पापात्माएं हैं ना। बाप को ही गाली देते रहते। बाप से तुमको बेमुख कर देते। सन्यासी लोग अपन को परमात्मा कहलाते हैं। सो और ही तुम्हारा बेरा(बेड़ा) डुबोय देते हैं। सारे भारत का बेरा(बेड़ा) किसने डुबोया है?बाप कहते हैं तुम्हारे इन कलियुगी गुरुओं ने। अनेकानेक गुरू हैं, जो तुमको बाप से बेमुख करते हैं। गायन भी है विनाशकाले विपरीत बुद्धि। किसने कहा?बाप ने खुद कहा है मेरे से प्रीत बुद्धि नहीं है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि हैं। मुझे जानते ही नहीं। जिनकी प्रीत बुद्धि है वह ही मुझे याद करते हैं। वह ही विजय पावेंगे। भल प्रीत है ;परंतु याद नहीं करते हैं। तो भी कम पद पाय लेंगे। बाप बच्चों को ... डायरैक्शन देते हैं मूल बात है सबको मैसेज देना बाप को याद करो तो पावन बनो। पावन दुनियां के मालिक बनो। ड्रामा अनुसार बाबा को लेना भी बूढ़ा शरीर ही होता है। वानप्रस्थ में प्रवेश करते हैं। मनुष्य वानप्रस्थ अवस्था में ही भगवान से मिलने मेहनत करते हैं। भक्ति में तो समझते हैं जप–तप करना (यह) सब भगवान से मिलने के रास्ते हैं। कब तक मिलेगा वह भी कुछ पता नहीं। जन्म जन्मांतर भक्ति करते आये हैं। भगवान तो कोई को मिलता ही नहीं। यह नहीं समझते बाप आवेंगे ही तब जब पुरानी दुनियां को नया बनाना होगा। रचता बाप ही है। चित्र तो है ;परंतु त्रिमूर्ति में शिवबाबा को नहीं दिखाते तो जैसे कि गला काट दिया। बाकी क्या काम का?शिवबाबा बिगर दिखाते हैं ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को

गला कटा हुआ है। बाबा बिगर निधण के बन पड़ते हैं। बाप आकर तुमको धण का बनाते हैं। 21जन्म तुम धण के बन जाते हो। कोई तकलीफ नहीं रहती। तुम भी कहेंगे जब तक बाप नहीं मिला था तो हम भी बिल्कुल निधण के तुच्छ बुद्धि थे। कहते भी हैं ओ गॉड फादर, परंतु जानते नहीं हैं कि बाबा से वर्सा कैसे मिलता है। पतित–पावन कहते हैं ;परंतु वह कब आवेंगे यह नहीं जानते। पावन दुनियां है ही नई दुनिया। बाप कितना सिम्पल समझाते हैं। तुमको भी समझ में आता है हम बाप के बने हैं। स्वर्ग के मालिक जरूर बनेंगे। शिवबाबा है बेहद का मालिक। बाप ने ही आकर सुख–शांति का वर्सा दिया था। सतयुग में सुख था। बाकी सभी आत्माएं शांतिधाम में थीं। अभी इन बातों को तुम समझते हो। शिवबाबा क्यों आया होगा?ऐसे ही .....। जरूर नई दुनियां रचने ,पतित को पावन बनाने आये होंगे। काम किया होगा। मनुष्य बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। मायावी बुद्धि थी जिसने शास्त्र बनाई। जिससे यह2 कर्मकाण्ड ....निकले। कह देते हैं व्यास भगवान ने बनाई। तुमको अब वंडर लगता है। व्यास भगवान ने फिर बैठ यह झूठी शास्त्र बनाई है। बाप कहते हैं यह भी ड्रामा में नूंध है। तुम बच्चों को बाप बैठ जगाते हैं। तुमको इस सारी ड्रामा का पता है। कैसे नई दुनियां फिर पुरानी होती है। बाप कहते हैं और सभी कुछ छोड़ एक बाप को याद करो। तुमको कोई से नफरत नहीं आती। यह समझाना पड़ता है। यह तो जैसे बंदर ,राक्षस बन गए हैं। ड्रामा अनुसार माया का राज्य भी होना ही है। अब फिर बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों अब यह चक्र पूरा होता है। अब तुमको ईश्वरीय मत मिलती है। उस पर चलना है। अब 5विकारों की मत पर नहीं चलना है। आधा कल्प तुम माया के मत पर चल तमोप्रधान बन गए हो। अब मैं तुमको सतोप्रधान बनाने आया हूं। सतोप्रधान और तमोप्रधान का खेल है। ग्लानी की कोई बात नहीं। कहते है। भगवान ने यह आवागमन (का) नाटक ही क्यों बनाया?क्यों का सवाल ही नहीं। यह तो ड्रामा का चक्र है, जो रिपीट होता रहता है। ड्रामा अनादि है। अभी है कलियुग। सतयुग पास्ट हो गया है। अब फिर बाप आये हैं। बाबा2 कहते रहो तो कल्याण होता रहेगा। बाबा कहते हैं यह अति गुह्य रमणीक बातें हैं। कहते हैं शेर के दूध लिए सोने के बर्तन चाहिए। सोने की वृद्धि कैसे बनेगी?आत्मा में मन–बुद्धि है ना। आत्मा कहती है मेरी बुद्धि अब बाबा के तरफ है। मैं बाबा को बहुत याद करता हूं। बैठे2 बुद्धि और तरफ चली जाती है ना। बुद्धि में धंधा–धोरी याद आता होगा। तो तुम्हारी बात जैसे सुनेंग नहीं। मेहनत है। जितना2 मौत नजदीक आता जावेगा तुम याद में बहुत रहेंगे। मरने समय सभी कहते हैं भगवान को याद करो। अब बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम (सबकी) वाणप्रस्थ अवस्था है। वापस जाना है। इसलिए अब मुझे याद करो। दूसरे कोई बात न सुनो। जन्म जन्मांतर के पापों का बोझा तुम्हारे सिर पर है। तुम सभी अजामिल ,पतित हो। सबसे नम्बरवन अजामिल (कौन) है?यह साधु–संत आदि। शिवबाबा कहते हैं इस समय सभी अजामिल हैं। सबसे बड़ा पाप करते हैं जो कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। गाली देते हैं। पत्थर–भित्तर में परमात्मा है। बाकी उनमें और तुम्हारे में फर्क क्या रहा?परंतु समझते थोड़े ही हैं। मूल बात है याद की यात्रा और आपस में (प्रेम) होना चाहिए। एक/दो से राय लेनी है। बाप प्रेम का सागर है ना। तुम भी आपस में बहुत प्यारे होने चाहिए। देहीअभिमानी बन बाप को याद करना है। बहन–भाई का सम्बंध भी तोड़ना पड़ता है। भाई–बहन से भी योग न रखो। एक बाप से ही योग रखो। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारी विकारी दृष्टि खलास हो जायेगी। कर्मेंद्रियों से कोई विकर्म न करना है। मंसा में तूफान जरूर आवेंगे। यह बड़ी मंज़िल है। बाबा कहते हैं भल हाथ लगाओ पर देखो कर्म इंद्रियां धोखा देती हैं तो हाथ लगाना भी छोड़ दो। खबरदार रहो। अगर उल्टा काम कर लिया तो खलास। पढ़ें तो वैकुण्ठ का मालिक.....मेहनत के सिवाय थोड़े ही कुछ हो सकता है। बहुत मेहनत है। देह सहित देह के सर्व सम्बंधों को छोड़ना है। कोई2 तो बंधनमुक्त भी फंसे रहते हैं। ओम।